हास्य के बीच लालच और झूठ हुआ बेपर्दा

उदय भूमि ब्यूरो

बरेली। एसआरएमएस रिद्धिमा में राजकुमार अनिल द्वारा लिखित जरूरत है श्रीमती की नाटक का मंचन किया गया।

नाटक का मुख्य पात्र एक चालाक मुनीम है जो अपने सेठ को चूना लगाता रहता है। वह सेठ की संपत्ति को हड़पना चाहता है। उधर सेठ अपनी इकलौती बेटी मंदा का विवाह अपने मित्र दीनानाथ के बेटे मलय कुमार से कराना चाहता है। लेकिन सेठ कभी मलय कुमार से मिला नहीं होता है। यह बात मुनीम को पता चल जाती है। एक दिन सेठ किसी काम से बाहर जाता है इसीबीच एक गरीब चित्रकार मुकेश लालची मुनीम से टकरा जाता है। वह मुनीम से कहता है कि उसकी माँ बीमार हैं उसे पैसे की सख्त जरूरत है। मुकेश की बात सुनते ही मुनीम के लालची दिमाग में ख्याल आता है कि क्यों न इस गरीब चित्रकार को नकली मलय कुमार बनाकर सेठ जी से मिलवा दूं। वह चित्रकार मुकेश को नकली मलय कुमार बनाकर सेठ जी के पास ले जाता है। मुनीम पहले ही मुकेश से कह देता है कि शादी के बाद वह सेठ की आधी दौलत उसके नाम कर देगा। लेकिन मुनीम इस बात से अंजान होता है कि मुकेश और मंदा पहले से ही एक दूसरे से प्रेम करते हैं। इसबीच एक कवि मंदा से एकतरफा प्रेम करता है और उससे शादी करना चाहता है। लेकिन इतने में असली मलय कुमार सेठ के यहां पहुंच जाता है जो कि मंदबुद्धि लड़का दिखाया गया है। अंत में असली मलय कुमार जो कि शुरू से पागल होने का नाटक कर रहा होता है वह असल मे पागल नही होता है। वह अपने पिता सेठ दीनानाथ की मर्जी के खिलाफ सेना में भर्ती हो जाता है। इसी कारण पागल बनने का नाटक करता है। नाटक में सेठ जी के नौकर छटंकी ने अपने अभिनय से खूब हंसाया। नाटक का निर्देशन विनायक श्रीवास्तव रिद्धिमा गुरु अम्बुज कुकरेती द्वारा किया गया। एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति, आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति, ऋचा मूर्ति, सेंटर हेड आशीष कुमार मौजूद रहे।